अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

"माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में श्रंगार वर्णन"

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 04अप्रैल 1889 को ब्रिटिश इंडिया मे हुआ था। इनका जन्म स्थान होशंगाबाद जिले के बवाई गाँव में हुआ।माखनलाल चतुर्वेदी के जन्म के समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था एवं तब स्वाधीनता के लिए संघर्ष चल रहा था। इन्होंने असहयोग आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी कई गतिविधियों में भाग लिया। इसी क्रम में वो कई बार जेल भी गए और जेल में कई अत्याचार भी सहन किए,लेकिन अंग्रेज उन्हें कभी अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सके। माखनलाल चतुवदी ने अपने जोवन और लेखन कौशल का उपयोग देश की स्वतंत्रता के लिए करने का दृढ़ निर्णय लिया।माखनलालजो 16 वर्ष को आयु में स्कूल के अध्यापक बन गए थे।इन्होंने 1906 से 1910 तक एक विद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। 1910 में अध्यापन का कार्य छोड़ने के बाद माखनलाल चतुर्वेदीराष्ट्रीय पत्रिकाओं में सम्पादक का काम देखने लगे थे। इन्होंने ''प्रभा" और "कर्मवीर" नाम की राष्ट्रीय पत्रिकाओं में सम्पादन का कार्य किया। माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी लेखन शैली से देश के एक बहुत बड़े वर्ग में देश–प्रेम भाव को जागृत किया। आपके भाषण भी आपके लेखों की तरह ही ओजस्वी और देश–प्रेम से ओत–प्रोत होते थे। माखनलाल जी 1955 में साहित्य अकादमी का अवार्ड जीतने वाले पहले व्यक्ति थे। हिंदी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान देने के कारण ही पंडितजी को 1959 में सागर यूनिवर्सिटी से डी.लिट् की उपाधि भी प्रदान की गयी। 1963 में माखनलाल चतुर्वेदी को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपूर्व योगदान के कारण पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया।

माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य की विधाओं में दिए गए योगदान के सम्मान में बहुत सी यूनिवर्सिटी ने विविध पुरस्कार के नाम उनके नाम पर रखे।पंडितजी के देहांत के 19 वर्ष बाद 1987 से ''माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार" सम्मान देना शुरू किया गया।पोस्टेज स्टाम्प की शुरुआत 4 अप्रैल 1977 को पंडितजी के 88वें जन्मदिन पर जारी हुई।राष्ट्र ने साहित्य जगत का यह अनमोल हीरा 30 जनवरी 1968 को खो दिया।पंडित जी उस समय 79 वर्ष के थे और देश को तब भी उनके लेखन से बहुत उम्मीदें थी। युग निर्माता कवि डॉ माखनलाल चतुर्वेदी बहुमुखी प्रतिभा क धनी व्यक्तित्व के स्वामी थे।हिन्दी साहित्य जगत में इनका विशेष स्थान है। छायावादी युग के दीपस्तम्भ,यथार्थवादी कहानीकार,उच्चतम कोटि के नाटककार,उन्मुक्त गायक व महान स्वतंत्रता सेनानी अर्थ पीड़ित होते हुए भी निरन्तर साहित्य साधना में लीन रहे।माखनलाल चतुर्वेदी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है :

काव्य संग्रह: हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चारण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही, "धूम्र–वलय"आधुनिक कवि भाग–6

नाटक: कृष्णार्जुन युद्ध,

निबंध संग्रह: साहित्य के देवता, पॉव–पाँव, अमीर इरादे :गरीब इरादे ,रंगों की बोली

कहानी संग्रह: कला का अनुवाद

संस्मरण: समय के पाँव,

वर्तमान में माखनलाल चतुर्वेदी के लेखन का उतना ही महत्त्व है जितना कि आजादी के आंदोलन से लेकर सत्तर के दशक में उनके अवसान का था। आवश्यकता है कि उनके समग्र लेखन को पुनः प्रतिष्ठापित किया जाए। वे एक प्रतिबद्ध पत्रकार के साथ ही क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी व संस्कृतिनिष्ठ कवि थे। साहित्य और पत्रकारिता के अपने अनुष्ठान में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

वे शब्दों को चेतना में डुबो कर कलम तक लाते थे। उनमें भारतीय संस्कृति को ढूंढने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे तो खुद भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विषयों पर काम करने वाले विद्वानों और मनीषियों को संस्कृतिककर्मी नहीं संस्कृतिधर्मी कहा जाना चाहिए। मूलतः साहित्यकर्मी साहित्यधर्मी ही होता है। माखनलाल चतुर्वेदी शास्त्र और शस्त्र दोनों को साथ लेकर चलते थे। आज भी दोनों को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। वे हमेशा कहा करते थे कि भारतीयता या हमारी परम्पराओं में जीना दकियानूसी नहीं, गर्व की निशानी है। हम आज अंधे उपदेशक हो गए हैं, मगर उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। उनका कहा आज भी समीचीन है कि साहित्य कोरा धंधा नहीं है।निस्संदेह उनके कथन में किसी प्रकार की अतिश्योक्ति नहीं है।साहित्य के सभी पक्षों पर उनकी अभिव्यक्ति सराहनीय है।चतुर्वेदी जी के काव्य मेंसभी स्थानों पर मर्यादित,संयमित,पवित्र एवंउदात्त नारी श्रगार वर्णन भारतीय संस्कृति व गौरवान्वित इतिहास को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम हैं।

नर और नारी दोनों ही सृष्टि का सुन्दर वरदान है। दोनों का एक–दूसरे के प्रति समर्पण,आस्था,विश्वास उनके रिश्ते को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देत है।दोनों के मिलन से गृहस्थाश्रम जीवन सुन्दर बनता है। गृहस्थाश्रम का प्राचीन संस्कृति में सर्वाधिक महत्व चित्रित किया गया है। दोनों गृहस्थाश्रम के नियमों में बँधकर सामाजिक कृत्यों को पूर्ण करते हुए सन्तानोत्पत्ति से गहस्थ जीवन को आग बढ़ाते हुए जीवन यापन करते हैं।नर और नारी श्रृंगार को ही दाम्पत्य प्रेम माना जाता है।प्रणय भाव अधिक व्यापक,अधिक गम्भीर और अधिक दृढ़ होता है इसमें कोई संदेह नहीं है।यह प्रेम के सभी भावों में सर्वश्रेष्ठ भाव है।प्रेम का अन्तर्भाव अन्त में श्रृंगार में होता है।माखनलाल चतुर्वेदी 27 वर्ष की अवस्था में ही विधुर हो गए थे,अतः कवि ने अपनी रचनाओं में श्रृंगार भावनाओं को संयमित व नियंत्रित भाषा में अभिव्यक्त किया।इनकी रचनाओं में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग व वियोग का चित्रण किया गया है।संयोग श्रृंगार में स्त्री–परूष के प्रेम का चित्रण दर्शनीय है।यह जीवन की मधुर बेला की मधुर मंदाकिनी है जिसमें मानव हृदय आनंद का अनुभव करता है।माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में उदात्त प्रेम की सुन्दर प्रस्तुति पाठकों को अपनी ओर आकष्ट करने में सक्षम हैं। इनकी रचनाओं में प्रेम वर्णन में अनुभूति की गहराई और सहज मार्मिकता है।

कवि अपनी पत्नी के रसीले बोल, उसकी मादक आँखे, मस्ती भरी चाल, स्नेह चुम्बन आदि व्यापार से आनन्द का अनुभव करता है। कवि संयोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहता है कि :–

''वे तुम्हारे बोल!
वह तुम्हारा प्यार, चुंबन,
वह तुम्हारा स्नेह सिहरन,
वे तुम्हारे बोल!
वे अनमोल मोती!
वे रजत–क्षण!
वे तुम्हारें आसुओं के बिन्दु
वे लोने सरोवर के बिन्दुओं में प्रेम के भगवान का संगीत भरभर!
बेलते थे तुम अमर रस घोलते थे।''[1]

अल्पायु में पत्नी के देहांत से चतुर्वेदी जी अपनी जीवन संगिनी के अभाव में अत्यन्त खिन्न हो उठते हैं व विरह व्यथित हृदय से कराहते हुए कहते हैः–

''हरि खोया है ? नहीं, हृदय का धन खोया है,
और, न जाने वही दुरात्मा मन खोया है।''[2]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

जहाँ विरह अवस्था में कवि मन चित्कार उठता है वहीं संयोग अवस्था में सुखद अनुभूति चरम सीमा पर होती है। कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ उसके प्रियतम का अस्तित्व नहीं। संयोग श्रृंगार का उदाहरण दृष्टव्य है :–

''मैं कहीं होऊँ न होऊँ, तू मुझे लाखों में हो,
मैं मिटूँ जिस रोज मनहर, तू मेरी आँखों में हो।''[3]

कवि का संयोग प्रेम वर्णन मर्यादित व नैतिकता के साथ बड़ा ही आकर्षक और रसप्रद है। उदाहरण दृष्टव्य है :–

''तुम रीझो तो रीझो साजन, लखकर पंकज का खिल जाना
युग–धन! सीखे कौन, नेह में डूब चुके तब ऊपर आना।''

इनके काव्य में श्रृंगार अपनी स्वतन्त्र सत्ता क साथ उपस्थित होता है। यथा :–

''हरि फसल जब–जब बल खाए
खड़े–खड़े इतराना साथी
नयनों की सैनों में आकर
यह घरद्वार बसाना साथी।
तुम चुप–चुप आ जाना साथी।।''[4]

कवि मन जीवन संगिनी के वियोग में सदैव व्यथित ही नहीं होता अपितु अपनी पत्नी के साथ बिताए लम्हो की याद में इतना निमग्न हो जाता है कि वो पुरानी स्मृतियाँ कवि के जीवन को आनन्दपूर्ण क्षणों की अनुभूति कराती है। कवि मादक क्षणों को याद करते हुए कहता है कि :–

''तुम मिले, प्राण में रागिनी छा गई!
भूलती–सी जवानी नई हो उठी,
भूलती–सी कहानी नई हो उठी,
जिस दिवस प्राण में नेह–बं"ाी बजी,
बालपन की रवानी नई हो उठी।
कि रसहीन सारे बरस रस भरे
हो गये जब तुम्हारी छटा भा गई।''[5]

प्रियतमा की यादें कवि मन को बेचैन कर देती है। वियोग की तीव्रता अत्यधिक बढ़ जाने पर वह परमसत्ता से प्रार्थना करता है कि कम से कम उसे अपनी प्रियतमा की मधुर वाणी का स्वर सुनाई पड़ जाए, जिससे उसके व्यथित मन को राहत प्राप्त हो। प्रियतमा द्वारा कवि को 'प्राण' सम्बोधन करना कवि को अत्यधिक भा रहा है और वह उसके इन बोलों को अनुभव करना चाहता है। अतः वह ई"वर से प्रार्थना करता है कि :–

''आज तुम होते कि यह वर माँगता हूँ
इस उजड़ती हाट में घर माँगता हूँ।
लौट कर समझा रहे जी भा रहे तब बोल,
बोल पर जी दूखता रहे शत f"ार डोल,
जब न तुम हो तब तुम्हारें बोल लौटे प्राण
और समझाने लगे तुम प्राण हो तुम प्राण!
प्राण, बोलो वे तुम्हारे बोल!''[6]

वियोग प्रेमानुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए कवि कहता है कि

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

''पूजा के ये पुष्प गिरे जाते है नीचे
यह आँसू का स्त्रोत आज किसके पद सींचे,
दिखलाती क्षण मात्र, न आती प्यारी प्रतिमा,
यह दुखिया किस भाँति, उसे भूतल पर खींचे।''[7]

अपनी पत्नी की मृत्यु हो जाने पर कवि टूट जाता है, बिखर जाता है। पुरूष प्रधान समाज अपने दुख को छिपाने का प्रयास करता है ताकि समाज उसे कमजोर न समझें, उसका मजाक न उड़ाए। परन्तु कवि समाज की परवाह नहीं करता। वह अपने दुख की अभिव्यक्ति करते हुए कहता है कि :–

''भाई छेड़ो नहीं, मुझे खुलकर रोने दो
यह पत्थर का हृदय आँसुओं में धोने दो
X X X
कुछ भी मेरा हृदय न तुमसे कह पायेगा
किन्तु फटेगा; फटे बिना क्यों रह पायेगा।''[8]

अपनी पत्नी का साथ अलग होने पर कवि को ऐसा लगा मानो उसके जीवन से सारा वैभव व समृद्धि नष्ट हो गई हो। उसका सब कुछ छीन लिया गया हो। उसके जीवन रूपी बगीचे की सुन्दरता व खु"ाबू सदैव के लिए उससे दूर चली गई हो। अब उसके बगीचे में केवल पतझड़ है। कवि अपने मन के उद्‌गारों को व्यक्त करते हुए कहता है कि :–

''तरूणाई के प्रथम चरण में जोड़ी टूट गई,
फूली हुई रात की रानी, प्रातः रूठ गई!
गंध बनी, साँसों भर आई
छन्द बनी फूलों पर छाई
बन आनन्द धूलि पर बिखरी
यौवन के तुतलाते वैभव, संध्या लूट गई!
फूलों भरी रात की रानी सहसा रूठ गई।''[9]

माखनलाल जी की विरहावस्था में तीव्र संवेदना, गहन अनुभूति और भाव निरूपण की अपूर्व क्षमता व भाव सरलता आदि द"र्नीय है। विरह की कसक, पीड़ा, वेदना व व्यथा में कवि को सारा जगत ही दुःखी व सूना दिखाई देता है। घर पत्नी से होता है। पत्नी के बिना घर–घर नहीं होता है। इसी सत्य को उद्‌घाटित करते हुए कवि कहते हैंकि :–

''क्या कहा, कि यह घर मेरा है ?
जिसके रवि ऊगे जेला में
संध्या होवे विरानों में,
उसके कानों में क्यों कहने
आते हो ? यह घर मेरा है ?[10]

मनमोहक भावपूर्ण और वि"वास प्रदायिनी स्थिति पर प्रका"ा डालते हुए कवि पथिक की प्रतीक्षा चित्रित करते हुए कहते हैं कि :–

''आज नयन के बँगले में,
संकेत पाहुने आए री, सखि!
जी से उठे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

कसक कर बैठ
और बेसुधी के बन में घूमें
युगल पलक
ले चितवन मीठी
पथ–पदचिन्ह चूक पथ भूले
दीठ डोरियों पर
माधव को
बार–बार मनुहार थकी मैं।''[11]

चतुर्वेदी जी का हृदय प्रेम का अक्षय भण्डार रहा है। दाम्पत्य सम्बन्धों में भावुकता, तरलता, कोमलता, श्रृंगार वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक है। कवि के काव्य में संयोग व वियोग दोनों पक्षों का स"ाक्त चित्रण का कारण कवि की निजो अनुभूतियाँ रही हैं। यह सत्य है कि स्वानुभूति से किया गया वर्णन अधिक स"ाक्त होता है। यही कारण है कि कवि की रचनाओं में विवेचित प्रेम के दोनों पक्षा का उदात्त व मार्मिक चित्रण चतुर्वेदी के काव्य में चित्रित हुआ है।

डा० कामना कौशिक
सह प्रवक्ता हिन्दी
वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

सन्दर्भ सूची:

1. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 128
2. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 41
3. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 48
4. सम्पादक प्रेम नारायण टंडन,माखनलाल चतुर्वेदी,व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ 250
5. माखनलाल चतुर्वेदी,बीजुरी काजल ऑज रही पृष्ठ 94
6. सम्पादक प्रेमनारायण टंडन,माखनलाल चतुर्वेदी,व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ 156
7. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावलो भाग –6 पृष्ठ 129 –130
8. सम्पादक प्रेमनारायण टंडन,माखनलाल चतुर्वेदी,व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ 132
9. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 41
10. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 266
11. माखनलाल चतुर्वेदी,रचनावली भाग –6 पृष्ठ 168
12. डॉ रंजन,माखनलाल चतुर्वेदी,एक चिंतन पृष्ठ 92